को साझा करती। इस तरह से उस बातचीत में खुशी, दु:ख के साथ समस्या का समाधान और कई अनुभव एक दूसरे के साथ साझा होते थे। हमें मालूम है कि पनघट तक का रास्ता कितना स्पष्ट होता था, पानी भरने की रस्सी हमेशा कुएं पर बाल्टी के साथ मौजूद रहती थी।

कुओं से खेती में पानी चड़स (चमड़े का पानी खेंचने वाला) जो दो बैलों की सहायता से कुओं से पानी खेचा जाता था और अलग से एक उसी में हौदी कुडनुमा होता था, जिसमें मवेशी पानी पीते, गांव के लोग नहाते, कपड़े धोते थे। इसी में महिलाएं अपने घूंघट की आड़ में पानी भी भर ले जाने का जतन करती। पनघट के गीत होते थे, जो महिलाएं आपस में कंठ का रियाज रोज करती थीं। गांव में भोर में ही आटा पीसने की घट्टी (चक्की) होती थी तो उसमे भी महिलाए गा-गाकर पीसती थीं। यह संस्कार हमें हमारे पूर्वजों ने दिया। जब नवयुवतियों को बच्चे का जन्म होता तो सवा महीने बाद कुआं पूजने की रस्म के साथ ही वह घर गृहस्थी के काम प्रारम्भ करती थीं।

उस समय पनघट का जहां पानी भरके की विधिवत व्यवस्था नहीं होती थी तो महिलाएं एक पत्थर जो कुएं की मुड़ेर पर रखा होता था। लगातार पानी भरते रहने से गहरे गड्ढे उस शिला पर पड़ जाते थे। मुझे अच्छी तरह मालूम है हमारे गांव में हर गुरुवार को हाट भरता था तो हमारे यहां की महिलाएं अतिरिक्त पानी का प्रबंध करती थीं, जो हर राहगीर को प्यास से तुष्ट करती थी। यह पीढ़ियों से चला आ रहा है। पर अब, कुओं का क्षरण होना, पानी का जल स्तर लगातार नीचे जाना दिनों दिन टयूबवेल बोर द्वारा पानी को खेंचना हमारी परम्परा पर सीधा प्रहार है। हमारे पर्यावरण को इससे खतरा है। मनुष्य जीवन को खतरा है। हमने गांव के जीवन को अगर जीया है तो नदी किनारे पहाड़ों पर से रिसता पानी प्यास बुझाने के लिए (झरी) खोद कर फिल्टर पानी पीने योग्य बनाकर हर राहगीर पशु-पक्षी, ग्वाल जंगल में अपनी प्यास बुझाते थे। आज कुदरती स्त्रोतों का दिनों दिन क्षरण होना, कुएं का सूखना, अपना जल स्तर नीचे जाना आज गांव की आबादी के लिए एक जीवन की लम्बी लड़ाई के लिए संकेत दे रहे हैं।

मीलों पानी के लिए रोज पगडण्डी को नापता

गांव वो बात, वो गीत, वो हंसी मजाक सब का सब जैसे किसी ने हमसे छुड़ा लिया हो। अब रस्सी से कम ही पानी खेंचा जाता है या तो कुओं में उतरना होता है या फिर कोई छोटे बर्तन से घड़े में पानी एकत्रित किया जाता हैं। इस पानी की लड़ाई गांव से लेकर शहर और दुनिया में एक भंयकर आपदा का संकेत देती दिख रही है। जो पानी नि:शुल्क उपलब्ध होता था, आज फिल्टर पानी के नाम पर बहुत बड़ा व्यापार का रूप ले लिया है। इस तरह के पानी और बोतल के पानी से तरह-तरह की बीमारियों में मनुष्य को अधमरा कर दिया है।

अब आने वाले समय में कुएं और बावड़ी हम पुस्तकों, प्रदर्शनियों में ही देखने के लिए मजबूर हो रहे हैं। कहीं-कहीं तो ट्यूबवेल भी सफल नहीं है अगर हो गए तो बारह माह की जलापूर्ति के लिए वे अब अपर्याप्त हैं तो कुएं का जीवन तो पूरी तरह नष्ट हो गया।

कुआं खत्म, संस्कार खत्म, पनघट की डगर खत्म, उस डगर को सरल बनाने वाले समूह, एकल गीत खत्म होना, जल से दूर जाना या यूं कहें जल हमसे दिनोदिन दूर होता जा रहा है। आज पानी की लड़ाई किसी परिवार की लड़ाई नहीं, एक सभ्यता की लड़ाई है। एक जीवन की लड़ाई है। वह दिन दूर नहीं जब जल एक महामारी का रूप लेकर कई प्राणों की आहूति लेगा। यह सिलसिला हमे दिखने लगा हैं। सूखते जंगल, प्यासे पशु-पक्षी और प्यासा मनुष्य जीवन और इस बात का यह सीधा संबंध हमें विश्व युद्ध की ओर ले जा रहा है। पानी का मोल हम आज भी शहर वाले नहीं जान रहे हैं। पानी अनमोल है। हमें सामूहिक संकल्प से इसे बचाना होगा। अन्यथा बूंद-बूद को तरसना होगा।